Q→ वैशेषिक के परमाणुवाद की चर्चा करें?

Ans→ परमाणुवाद न्याय-वैशेषिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसके आधार पर वे विश्व की सावयव वस्तुओं की उत्पत्ति एवं विनाश की व्याख्या करते हैं। चूंकि यहां परमाणुओं के आधार पर भौतिक विश्व की सृष्टि एवं विनाश की व्याख्या की जाती है, इसलिए उनका सृष्टि सम्बन्धी सिद्धांत परमाणुवाद कहलाता है।

महर्षि गौतम परमाणु को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि परं वा त्रुटे। अर्थात् जिसे और अधिक विभाजित न किया जा सके, वही परमाणु है, अतः स्पष्ट है कि परमाणु निरवयव है तथा निरवयव होने के कारण अविभाज्य है; अविभाज्य होने के कारण नित्य है।

वैशेषिक के अनुसार, संख्यात्मक दृष्टि से परमाणु अनन्त हैं तथा सभी परमाणु स्वभावतः निष्क्रिय है। यद्यपि परमाणु नित्य है, किन्तु इनसे उत्पन्न होने वाली समस्त सावयव

वस्तुएँ अनित्य हैं, अतः परमाणु संसार की समस्त सावयव वस्तुओं के उपादान का कारण है।

प्रत्येक परमाणु का अपना एक विशेष महत्व होता है जो इसे अन्य परमाणुओं से अलग करता है अर्थात् कोई भी परमाणु अन्य के समान नहीं हैं, चाहे वे एक ही वर्ग के क्यों न हों।

परमाणुओं के प्रकार — न्याय-वैशेषिक में चार प्रकार के परमाणुओं को स्वीकार किया गया- पृथ्वी, अग्नि, जल तथा वायु के परिमाणु। इन चार भूतों के अतिरिक्त आकाश एकमात्र ऐसा भूत है, जिसके परमाणु नहीं होते, क्योंकि आकाश विभु है। आकाश चार भूतों के परमाणुओं के संयोग व वियोग के लिए अवकाश प्रदान करता है।

इन परमाणुओं में गुणात्मक तथा संख्यात्मक भेद पाया जाता है; जैसे - वायु के परमाणु में स्पर्श का गुण पाया जाता है किन्तु पृथ्वी के परमाणुओं में रस, गन्ध आदि गुण भी पाए जाते हैं, किन्तु इनमें गन्ध का गुण

प्रमुख हैं। चूंकि सभी परमाणु सूक्ष्मतम हैं। अतः इन्द्रियों के द्वारा उनका प्रत्यक्ष सम्भव नहीं है। परमाणुओं की सत्ता का ज्ञान अनुमान के आधार पर किया जाता है। आकाश नामक भूत का ज्ञान भी अनुमान पर ही आधारित है।

न्याय-वैशेषिक मतानुसार जीवों को उनके कर्मों का उचित फल प्रदान करने के लिए ईश्वर द्वारा इस जगत् की रचना निष्क्रिय परमाणुओं में गति को उत्पन्न करके की है। इस क्रम में सर्वप्रथम ईश्वर दो परमाणुओं को आपस में मिलाकर द्विअणु की रचना के पश्चात् तीन द्विअणुओं के संयोग से एक त्रयणुक का निर्माण करता है।

यह त्रयणुक सृष्टि का सूक्ष्मतम दृष्टिगोचर होनेवाला दृश्य है, परमाणुओं का यह संयोग क्रम चलता रहता है और इस प्रकार सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।